DIVYA SANDESH
Divine Message

GURU POORNIMA EDITION
July 2009

शत प्रणाम स्वीकारो ।
Shat Pranam Sveekaaro

हे माँ पद्मा! हे जगदम्बा! शत प्रणाम स्वीकारो ।
He Maa Padma! He Jagdamba! Shat Pranam Sveekaaro

बिनु कारण करुणा कारिणि तुम, करुणा कर सिर धारो,
Binu kaaran karuna kaarini tum, karuna kar sir dhaaro

हौं अति पतित,पतित - पावनि तुम,यह निज विरद विचारो ।
Haun ati patit, patit-paavani tum, yeh nij virad vicharo

तुम अरु गुरुवर इक हौं जानत, दृढ़ विश्वास हमारो,
Tum aru guruvar ik haun jaanat, dridh vishvas hamaro

अब गुरुवर - दर्शन महँ दर्शन,पाऊँ नित्य तिहारो ।
Ab guruvar – darshan mahan darshan, paayoon nitya tiharo

करहु कृपा अस निज दृगजल सों, गुरुवर चरण पखारों,
Karahu kripa as nij drigjal saun, guruvar charan pakharon

बरबस लेकर मम मन माँ तुम, हमरी दशा सुधारो ॥
Barbas lekar mam mann maa tum, hamaree dasha sudharo

ब्रज बनचरी दीदी जी, अप्रैल १२, २००९

Homage to Guru Maa Padma

O Mother Padma! O Mother of the entire creation! Accept my countless obeisances.

Oh causelessly merciful Mother! Place Your merciful hand on my head. I am extremely sinful and You are the purifier of sinners. Reflect on Your merciful nature and grace me.

I have firm faith that You and Gurudev are one. Please bless me, so that I may always see You in my Guru.

Grace me so that I may wash Gurudev's lotus feet with my tears. Mother! Take my mind away from me forcibly and remedy my situation.

In This Issue

Amma Stuti (Homage to Guru Maa Padma)	Page 1
Remembering Amma (Hindi)	Page 2
A Concealed Divine Personality - Glorious Guru Maa Padma	Page 8
Guru and God	Page 13
Monsoon Season Special	Page 14
KIDZ CORNER	
Laugh to be healthy	Page 14
Answers to Holi Quiz	Page 15
Puzzle: Find the words	Page 15
Is there no God?	Page 15
Glimpses from India	Page 16

श्री वृन्दाबन धाम व श्री गोलोकधामवासिनी
माँ पद्मा से जुड़ी अलौकिक घटनाएँ

श्री वृन्दाबन धाम श्रीराधाकृष्ण की दिव्य क्रीड़ा स्थली है। जो आज भी रसिकोंका प्राण व उनका प्रमुख आकर्षण केन्द्र है। श्री राधाकृष्ण संबंधी पर्वों पर तो इस अलौकिक तीर्थ पर इतनी भीड़ हो जाती है कि प्रमुख मार्गों पर श्रीकृष्ण भक्तोंका ताँता ही लगा रहता है। समस्त वाड्.मय मधुरातिमधुर "राधे" नाम के दिव्य उच्चारण से गुंजायमन रहता है। यह वह नगरी है जहाँ के मोर, तोते, कोयल आदि पक्षी भी राधे राधे कह कूजते रहते हैं। श्री राधा कृष्ण के प्रेमी विरक्त संतो का तो यह गढ़ है। हजारों साधु भगवन्नाम लेते हुये,श्रीराधा रानी के सहारे कहीं भी सोकर और कुछ भीप्रसाद रूप में पाकर, यमुना का जलपान कर के आनंद से रहते हैं।

इसी दिव्य वृन्दाबन धाम मे वर्तमान काल मे सर्वाधिक आकर्षण का केन्द्र है - **श्री श्यामा श्याम धाम** नामक आश्रम। यह आश्रम जगद् गुरु श्री कृपालु जी महाराज की प्रेरणा व अथक प्रयास से सन् 1993 में निर्मित हुआ था। तब से हजारों कृष्णभक्तों के लिये यह परमाश्रय बना हुआ है। यहाँ साधकों को उपदेश व अभ्यास द्वारा परम निष्काम हो कर, माधुर्यभाव से श्री राधाकृष्ण की अनन्य भक्ति करने का निरन्तर अभ्यास कराया जाता है।

इस वृन्दाबनधाम में श्रद्धालु भक्तजन प्रायः साधु भोज,भंडारा आदि आयोजित करते रहते हैं और अपनीअपनी श्रद्धा,क्षमताव दानशीलता के अनुसार साधुओं को आमंत्रित कर भोजन व वस्त्र आदिकी भेंट देकर उनका सम्मान करते हैं।

अलौकिक त्यागमूर्ति - माँ पद्मा

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज को भारत में भला कौन नहीं जानता, जो महत्तम संतों व विद्वानोंद्वारा सदा सर्वदा पूजनीय हैं, जिन्हें काशी के मूर्द्धन्य विद्वानों द्वारा भी **भक्तियोग रसावतार** उपाधि से पूजित किया गया है। इन्होंने श्यामा श्याम धाम में भक्ति की गहन धारा को प्रवाहित कर अहर्निश हरिनाम ध्वनि व नित्य बढ़ती हुई भक्तों की संख्या से वृन्दाबन की शोभा व गरिमा में चारचाँद लगा दिये है। इनके निश्छल व गहन प्रेम से लालित पालित, इनके हजारों भक्त जब देश विदेश से इनके पास आते हैं तो दिवानों की भाँति इनके आगे पीछे इस प्रकार मँडराते रहते हैं, मानो इनकी सन्निधि के अतिरिक्त न कोई और सुख है, न संसार।

श्री महाराज जी से हमें जो भी ममत्त्व और प्यार मिलता है उसका सारा श्रेय उनकी गोलोक वासिनी धर्मपत्नी श्रीमती पद्मा देवी को है। जिन्होंने अपने संपूर्ण जीवन का समस्त सुख केवल पति की प्रसन्नता में ही न्योछावर कर दिया। और इस प्रकार गुरुदेव को अपने लक्ष्य संबंधी कार्यक्रमों के सफल प्रयासो के लिये उन्हें पूर्णतया निर्बन्ध कर दिया। स्वयं अपने पातिव्रत धर्म के सहारे वर्षों त्याग,वैराग्य का जीवन जीती रहीं।

श्रीमती पद्मा देवी (हमारी अम्मा जी) मनगढ़ से लगभग ५० मील की दूरी पर स्थित, प्रतापगढ़ जिले के लीलापुर ग्राम निवासी श्री कृष्णकुमार ओझा व श्रीमती राम रती ओझा की सुपुत्री हैं। इनके पिता एक बड़े जमींदार व गणित के अध्यापक थे और इन्हीं के समान अति सरल व उच्चकोटि केभक्त थे। इनके पितामह पंडित माधव प्रसाद ओझा एक प्रख्यात ज्योतिषाचार्य व प्रकांड विद्वान् थे।वस्तुतः उन्होंने ही श्री महाराज जी को पहिचाना व उन के बाल्यकाल संबंधी अलौकिक कौतुक व ख्याति से प्रभावित हो कर इन्होंने अपनी सर्व गुण सम्पन्न व अति सुन्दर पौत्री का हाथ श्री महाराजजी को देने का निश्चय कर लिया और तत्कालीन भारतीय ग्रामीण - परम्परा के अनुसार बाल्यकालमें ही दोनों का विवाह हो गया था। विवाह के दूसरे दिन 'खिचड़ी' नामक उत्सव के अवसर पर पितामह श्री माधव प्रसाद जी ने दोनों की कुंडली पढ़ कर सुनाई और सबको इस बात से अवगत कराया कि दोनों की कुंडली में दोनों के पचीसों गुण एक समान हैं। ऐसा संसार में कहीं संभव नहीं होता। कुछ गुणों की साम्यता ही दुर्लभ है, पचीसों की कौन कहे ? उन्होंने उपस्थित जन समूह के सामने यह भी घोषणा की थी कि - "आप सब से मेरा निवेदन है कि आज इनके (महाराज जी) दर्शन आप जी भर कर कर लें। भविष्य में इनको सारी दुनिया पूजेगी और इनके दर्शन अति दुर्लभ हो जायेंगे। ये कोई साधारण बालक नहीं हैं। इनकी कुंडली इस बात को प्रमाणित कर रही है कि साक्षाद् भगवान् हमारे सम्मुख बैठे हैं। क्योंकि ये लक्षण भगवान् के अतिरिक्त किसी और में हो ही नहीं सकते। मैं अपनीपौत्री पद्मा को,जो इनके ही समान गुण व शील वाली है, इन के हाथों सौंपते हुये आज अपने आप को परम गौरवान्वित व प्रत्यक्षतः विशेष भगवत् कृपा का पात्र अनुभव कर रहा हूँ। अपनी ज्योतिष विद्या के आधार पर भी मुझे यह दृढ़ विश्वास है कि एक दिन यह बालक अपने ज्ञानदीप सेसारे विश्व को आलोकित करेगा। यह एक अद्वितीय महापुरुष है।" **तब से इनके माता पिताव पितामह श्री महाराज जी व अपनी पुत्री (पद्मा देवी) में सदैव भगवद् बुद्धिही रखते थे। अम्मा जी के परिवार वालों का यह कहना है कि इनके जन्म के बाद से घर की समृद्धि दिन दूनेरात चौगुनेबढ़ने लगी थी। यही बात मनगढ़ की समृद्धि के लिये भी घटित होती है। इससे भी इनके महालक्ष्मी के अवतार होने की संपुष्टि होती है।**

श्री महाराज जी तो प्रायः बाहर ही रहते थे। पहले शिक्षा के कारण और बाद में अपने प्रचार कार्य के कारण। अतः अम्मा जी अपने अविचल प्रेम व त्याग का अखंड दीपक जलाए अधिकतर लीलापुर या मनगढ़ में ही उनकी प्रतीक्षा में रतरहती थीं। सन् १९५६ तक अखिल

भारत में अपने प्रचार कार्य के माध्यम से अपने शास्त्र वेद सम्मत,समन्वयात्मक अद्वितीय ज्ञान की पताका फहरा देने के पश्चात् व सन् १९५७ में जगद्गुरु बन जाने केपश्चात् श्रीमहाराज जी ने अपने जन्म स्थान श्री मनगढ़ धाम (उ.प्र. के प्रतापगढ़ जिले की तहसील कुण्डा का एक ग्राम) में एक साधना भवन का निर्माण करवाया। जहाँ सन् १९६४ से प्रतिवर्षएक माह का साधना शिविर होता है। तब से श्री महाराज जी लगभग दो माह के लिये मनगढ़ में रुकने लगे थे और अम्मा को उनके दर्शन, सेवा व सानिध्य का लाभ मिलने लगा था। तभी से सत्संगियों को भी उनका सम्पर्क प्राप्त कर के उनके दिव्य गुणोंका अनुभव होने लगा था, उनके निश्छल स्नेह व ममता की सुखद छींटे हमें आह्लादित करने लगी थीं और हम जानने लगे थे कि इनके ही चरण हमारी वास्तविक विश्राम-स्थली है। उनकी ही अनुकम्पा से श्री महाराजजी की सेवा का सौभाग्य व उनकी दिव्यता व महानता का आभास होने लगा था। एक वाक्य में हम यों कह सकते हैं कि आज गुरु चरणों में हमारा जितना भी अनुराग, विश्वास व निष्काम प्रेम है, उसकी आधारभूता हैं - निष्कामता की परम मूर्ति हमारी माँ पद्मा। अतः श्री महाराज जी की सफलता में अम्मा श्री के त्याग व पातिव्रत को मुख्य स्तम्भ कहा जा सकता है।

एक बार जब अम्मा की अवस्था बहुत कम थी,श्री महाराज जी की प्रतीक्षा में वर्षों बीत गये और वह अम्मा को दर्शन देने के लिये एक दिन को भी मनगढ़ नहीं गये। वे इस प्रतीक्षा मे शनैः शनैःथकने लगीं। निराश होकर उन्होंने व्रत ले लिया कि जब तक वे दर्शन नहीं देंगे हम भोजन नहीं करेंगे। छोटी सी अवस्था! सुकोमल अङ्ग! धीरे धीरे शरीर दुर्बल व कमजोर होने लगा। १-२ दिनकेबाद श्री महाराज जी की माँ (आजी) व मौसी जो वहीं रहती थीं, को भी पता चला कि उनकी कोमलाङ्गी पुत्र वधू अपने पति के वियोग में दो दिन से कुछ नहीं खा रही हैं तो उनका मन ऐसी सरल हृदया,पतिव्रता वधू के लिये विदीर्ण होने लगा। दोनों ने उनको अनेक प्रकार से मनाने व समझाने का प्रयास किया। मगर वह अपने निश्चय पर दृढ़ थी। श्री महाराज जी उस समय मेरे पिता श्री महाबनी जी के घर पर प्रतापगढ़ में थे। मौसी जी ने किसी प्रकार एक व्यक्ति भेजकर श्रीमहाराज जी को अम्मा जी का सारा वृतान्त बताया और उन से प्रार्थना की कि हमारी पुत्र वधू के प्राणों की रक्षा करो। श्री महाराज जी ने यह कह कर संदेश वाहक को वापस कर दिया कि "जब तक वह खाना नहीं खायेंगी,मैं नहीं आऊँगा।"मौसी ने पुनः अम्मा का संदेश भिजवाया कि **"पद्मा का प्रण है कि बिना तुम्हारा दर्शन किये वह खाना नहीं खायेंगी।"** दोनों में ठन गई। दिन पर दिनबीतने लगे। कोई हार मानने को तैयार नहीं। अन्ततोगत्वा मौसी व आजी ने रो रो कर व स्वयं भोजन आदि त्याग कर भोरी भारी, परम दयामयी अपनी वधू को मना लिया। अपने गुरुजनों के आग्रह पर, व उन लोगों के कष्ट की बात सोचकर उनका सरल हृदय पसीज उठा और बात रखने के लिये उन्होंने मौसी आदि की आज्ञानुसार अत्यल्प मात्रा में जैसे ही कुछ आहार ग्रहण किया,श्रीमहाराज जी आ गये। जैसे वह पहले से मनगढ़ में ही थे। केवल उनके हठ तोड़ने की प्रतीक्षा कररहे थे। तब से हमारी भोरी अम्मा केवल **"तत्सुखसुखित्वं"** वाले प्रेम के सर्वोच्च आदर्शको गाँठ बाँधकर ही सुखपूर्वक जीवन यापन करती रहीं। क्योंकि यही तो श्री महाराज जी के दर्शन (पहलिोसोपहय) का सर्वोच्च आदर्श भी है, जिसका वह नित्य निरन्तर प्रचार कर रहे हैं। संभवतः जन साधारण को यही शिक्षा देनेके लिये दोनों की यह अद्भुद् लीला थी और माँ ने अप्रत्यक्ष रूपसे इस लीला द्वारा भी पति के कार्योंमें सहयोग देने वाले अपने पतिव्रत धर्म को ही निभाया था।

हे निष्कामता व त्याग की मूर्ति ! तुमको शत शत प्रणाम है।

भक्तों पर बज्र पात

मार्च १३, २००९ को श्री महाराज जी के भक्तों पर बज्रपात हो गया, जब इनकी पत्नी श्रीमती पद्मादेवी अकस्मात् अपने अनंत स्नेह का आँचल छुड़ा कर अपने गोलोक धाम को सिधार गईं। जगदगुरुश्री कृपालु जी महाराज (श्री महाराज जी) के लाखों अनुयायी, जो गुरु माँ की ममता की डोर मेबँधे हुये, उन्हें अम्मा - अम्मा कह कर, उनके स्नेह - सागर में डूबे ही रहते थे, वे करुणा सागर श्री महाराज जी के रहते हुये भी अपने को नितान्त अकेला अनुभव करने लगे। उनका प्यासा हृदय चीत्कार कर उठा "कहाँ मिलेगी वह निश्छल ममता! वह प्यार भरा आश्रय! एवं अपनापन! जो अम्मा से अहर्निश बिना माँगे मिल जाता था । महाराज जी कभी डाट देते तो झट अम्मा के आँचल में सिर छुपा कर रोने का सहारा मिल जाता था, कहीं से थककर, हारकर, निराश हो कर आते तो अपना दुखड़ा उन्हे सुनाने का अवसर मिल जाता था। अम्मा अपनी भोली भाली ग्रामीण भाषा में कुछ शब्दों में ही ऐसा उत्तर देतीं थीं कि आस पास बैठे सारे सत्सङ्गी सहज रूप से हँस देते थे और हमारे प्रश्न का उत्तर भी मिल जाता था, मन की थकान भी दूर हो जाती थी। कितना भी बूढ़ा व्यक्ति उनके पास जाता तो अपने अपको उनके सामने बालक ही महसूस करता था। हाय! ये सब अब सदा के लिये छूट गया ? कभी नहीं मिलेगा ?"

उनके स्निग्ध स्नेहयुक्त इन बातों की स्मृतिवश भक्तों का मन विकल था। हमारे पिता स्वरूप श्री महाराजजी, जो स्वयं प्रेम के सागर हैं, अपने बच्चों की इस मनोव्यथा को मिटाने के लिये तुरन्त योजनायें बनाने लगे। उन्होंने सर्वप्रथम शास्त्रोक्त विधि के अनुसार पार्थिव शरीर के दाह संस्कार की समुचित योजना बनाई और एतदर्थ उन्होंने वृन्दाबन की दिव्यस्थली को चुना। अम्मा जैसी दिव्यात्माके शरीर का संस्कार और कहाँ शोभित हो सकता था ! यथा संभव अधिक से अधिक भक्त इस अवसर पर वृन्दाबन पहुँच सकें,इस ममत्वसे अभिभूत हो के हमारे गुरुदेव ने पूरे डेढ़ दिन तक प्रतीक्षाकी। परिणामतः माँ के प्रेमी भक्त इँग्लैंड,कनाडा,अमेरिका,हाँग काँग,आस्ट्रेलिया,ट्रिनिडाड आदि देशों से भाग पड़े। तब तक उपस्थित भक्त जन निरन्तर अश्रुपात करते हुये भगवन्नामसंकीर्तन के साथ माँकी परिक्रमा करते जा रहे थे।

अगले दिन उनका सर्वांग श्रृंगार किया गया व शोभा यात्रा का प्रबंध हुआ। सुन्दर से सुसज्जित रथपर आदरणीया माँ के शरीर को लिटाया गया और हजारों भक्तों के साथ, मार्गस्थित मंदिरों की परिक्रमा करते हुये यह यात्रा अंतिम संस्कारार्थ यमुना घाट पर पहुँची। उस अंतिम यात्रा में मीलोंलंबी भीड़ को देखकर ऐसा लगता था कि जैसे सारा संसार ही अपनी ममतामयी अम्मा को अंतिम श्रद्धाञ्जलि देने को लालायित हो उठा हो। और ऐसा क्यों न हो ? वह तो स्वभावतः हैं ही जगज्जननी। लगभग २० मिनट की दूरी को तय करने

में ४-५ घंटे लग गये। पूज्य गुरुदेव हम सब के संतोष के लिये यथोचित समय पर यमुना घाट पर यथास्थान पहुँच गये थे। उन्होंने शास्त्रोक्त विधि से संपन्न कराये गये हवन में भाग लिया, पारिवारिक जनव भक्तों को अपने अमल ज्ञान कासहारा देते हुये उनके आश्वास नव मनः शान्ति के लिये एक छोटा सा उपदेश दिया और कहा "आपकी माँ कहीं नहीं गई हैं। वे मुझमें ही समाहित हो गई हैं। "१५ मिनट के इस छोटे से उपदेश में वे बहुत सा गहन मर्म समझा कर एवम् हमारे व्यथित मन को एक विचित्र सी सान्त्वना दे कर चुप हो गये। शेष संस्कारकार्य का भार वे अपने दोनों पुत्रों (श्री घनश्यामत्रिपाठी व श्री बालकृष्ण त्रिपाठी)तथा तीनों पौत्रों (श्री रामानन्द त्रिपाठी ,श्री कृष्णानन्द त्रिपाठी व श्री प्रेमानन्द त्रिपाठी) को सौंप कर वापस आश्रम चले गये। चन्दन की लकड़ी से निर्मित शैया पर माँ के शरीर को स्थापित कियागया था। और उचित समय पर अविरल प्रवाहित पावन अश्रु जल से माँ के चरणों का प्रक्षालन कर के सपुत्रों ने दाह कर्म को सम्पन्न किया। उस समय सारा वाड्.मय भक्तों की पीड़ामयी चीत्कारव सिसकियों से गूँज गया।

तदुपरान्त श्री महाराज जी शरीर के लिये यथोचित वेदोक्त कर्मकांड तेरहीं (जो तेरहवें दिन मनगढ़में सम्पन्न होगी) व आत्मा के कल्याणा र्थ श्री वृन्दाबन धाम में महात्माओं के विशाल भोज' कीघोषणा कर के सभी भक्त जनों के साथ अपनी प्रमुख निवास स्थली मनगढ़ धाम चले गये।

मनगढ़ में तेरहीं संस्कार

मनगढ़, जहाँ के कण कण में अम्मा ज्ञात या अज्ञात रूप से सदा विहार करती हैं, जहाँ के धाम वासियों को अम्मा ने सदा अपनी संता न मानकर दुलारा हो, वहाँ के वासियों की क्या दशा हो रही होगी, इसका अनुमान पाठक स्वयं लगा सकते हैं। अतः मनगढ़वासियों के सम्मुख भी उन्होंनेएक छोटा सा सारगर्भित प्रवचन दे कर वहाँ के निवासियों की व्यथा को हल्का किया। तदुपरान्त दैनिक सत्सङ्ग आदि के कार्यक्रमो में सबको अत्यधिक व्यस्त कर दिया। खाली समय में जब भक्तमंडली प्रभु के पास आकर बैठती, वे हँस हँसाकर यही योजनाएँ बनाते कि तेरहीं में क्या और कैसेकिया जाय कि निमन्त्रित सभी ब्राह्मण पूर्णतया संतुष्ट हो कर जायें। उन्होंने हास परिहास के माध्यमसे यह कह कर कि "हमें क्या चिन्ता ?जिसका काम है वह स्वयं सँभालेगा। उनका नाम पद्मा है ।पद्मा माने महालक्ष्मी। तो जब स्वयं महालक्ष्मी का कार्य है तो भला किस बात की चिन्ता और किस चीज़ का अभाव ?"-इस रहस्य का उद्घाटन भी किया हमारी गुरु माँ "अम्मा" कौन थीं। वैसे तो बहुत पहले से ही सभी के अनुभव में यह बात आती ही थी और प्रायः सभी सत्संगी उन्हें महालक्ष मी या श्री राधा के रूप में ही पूजते थे,तथापि श्री महाराज जी के उपरोक्त कथन से इस भावना की सुदृढ़ पुष्टि हो गई। ज्ञातव्य है कि अम्मा जी का जन्म भी दीपावली के शुभ दिन (सन् १९२५ में) पर हुआ था। यह दिन श्री महालक्ष्मी पूजन का दिवस है। जिस प्रकार शरत् पूर्णिमा की आधीरात को श्री महाराज जी का अवतरण उनके जीवन के प्रयोजन (महारास रस दिलाने वाले माधुर्य भावयुक्त रागानुगा भक्ति का प्रचार) को दर्शाता है उसी प्रकार दीपावली के दिन अम्मा श्री का अवतरण भी उनके स्वरूप की ओर इंगित करता है।

ऐसी सरल हृदया, पतिव्रता, प्रेममयी, त्यागशीला, सदा सहयोगिनी पत्नी के बिछुड. जाने पर हमारेगुरुदेव की क्या मनःस्थिति होगी ! उदास तो हुये होंगे ! एक आँसू तो आया होगा !! पाठक जन यह सब जानने के लिये भी अवश्य उत्सुक होंगे। उनकी मनःस्थिति की बात तो वही जाने। क्योंकि ऐसे संत कब, कहाँ, कौन सी दिव्य स्थिति में रहते हैं इसका अनुमान कोई भी मायाबद्ध जीव तोलगा ही नहीं सकता। इस बात का भी हल्का फुल्का अनुभव उनके पास रहने वाले साधकों को होता रहता है। किन्तु उनकी किसी भी क्रिया या मुद्रा से एक क्षण को भी ऐसा नहीं प्रतीत होता था कि उनकी दृष्टि मे कोई अनहोनी बात घटित हो गई है। क्योंकि वस्तुतः अम्मा उनसे पृथक हुईही नहीं। जैसा कि उन्होंने अपने संक्षिप्त प्रवचन में व्यक्त भी कर दिया। वह तो औरों को भी सामान्य मानसिक स्थिति में रखने के लिये सतत् प्रयत्नशील थे।

जब वह अस्पताल से अम्मा को एक दिन पहले देख कर आये तभी साधारणतौर पर, साधारण मुद्रामें उन्होंने वृन्दाबन में अंतिम संस्कार के प्रबंध का आदेश दे दिया था व भक्तों को भी वृन्दाबन चलनेके लिये कह दिया था। उनकी दिनचर्या व मुख की मुसकान में कोई अंतर न ही दिखाई देता था ।अतः किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अपनी अम्मा सचमुच आज भर के लिये ही हमारे मध्य हैं।

उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन द्वारा यह भी सिद्ध कर दिया कि वह वेदान्त - दर्शन के मात्र वक्ता नहीं हैंप्रत्युत् उनका यह ज्ञान अन्दर से आलोकित है। जो किसी भी काल या परिस्थिति में अच्युत हीरहता है। अम्माजी के गोलोक सिधारने के पश्चात् गीता या वेदान्त - दर्शन संबंधी अपने सारे प्रवचनों को उन्होंने अपनी निजीदिनचर्या के द्वारा सत्य कर दिखाया। गुरुदेव यह भलीभाँति जानते थे कि माँ के प्रेम में पागल इन भक्तों के भावुक हृदय इस समय मेरे उपदेश नहीं स्वीकार करेंगे। अतः उनकी निजी दिनचर्या ही भक्तों को अप्रत्यक्ष रूप सेमानो वेदान्त का श्रवण व अभ्यास कराती रहती थी और अतीव सान्त्वना देने का कार्य करती थी।

मनगढ़ में अद्वितीय ब्रह्म भोज

श्री महाराज जी वर्षों से प्रतिवर्ष एक ब्रह्म भोज तो करते ही हैं। कभी कभी वर्ष में दो या तीन भोज भी हो जाते हैं। किन्तु इतने मु क्त हस्त से, इतने कम समय में इतना विशाल ब्रह्म भोज करते हुये कभी नहीं देखा था जैसा कि २५ मार्च को संपन्न होने वाली, अम्मा की तेरहीं के अवसर पर देखने को मिला। मन मोहक पंडाल सजा कर उसमें सुन्दर सी वेदी बनाई गई। चारों ओर यथा योग्य अतिथि, पारिवारिक जन, सत्संगी आदि के बैठने की समुचित व्यवस्था थी। लोकादर्श व शास्त्रों की रक्षा करते हुये हवन आदि के सारे अनुष्ठान योग्य पंडितों द्वारा विधि विधान से कराये गये। १३ प्रमुख ब्राह्मणों के अतिरिक्त १००० अन्य ब्रह्मणों को आमन्त्रित किया गया। प्रमुख तेरहों

ब्राह्मणों को भेंटमें मोटर साइकिल व १००० रु. की दक्षिणा के अतिरिक्त २-३ बार १००० - १००० रु. दक्षिणा देते हुये श्री महाराज जी अघाते न थे। १००० ब्राह्मणों को साइकिल सहित आवश्यकता का इतना सामान भेंट किया गया था कि उनके लिये सामान को घर ले जाना कठिन हो रहा था। नाई व यज्ञ कराने वाले पंडितों को भी मुँहमाँगा रुपया व भेंटे दी गई। ब्राह्मणों के अतिरिक्त समस्त ग्राम वासियों को भोजन कराया गया। **इस प्रकार पूजनीया माँ पद्मा की पावन स्मृति में बड़े ही सुन्दर व सुव्यवस्थित ढंग से २५ मार्च को ब्रह्म भोज सम्पादित हुआ। जो चिर स्मरणीय है।**

श्री वृन्दाबन धाम में अभूतपूर्व साधु भोज की योजना

ब्रह्मभोज के अगले ही दिन भक्तों की अगाध भीड़ को विदा करने के लिये श्री महाराज जी साधु भोज की तैयारी के लिये गोलोक धाम नई दिल्ली आ गये। वहाँ भी उनका पीछा करते हुये सैकड़ोंभक्त आ गये।

अब प्रारंभ हुई साधु भोज की तैयारी। श्री महाराज जी का प्रथम प्रस्ताव था कि संपूर्ण ब्रज में एक भी साधु न बचे। सब को आदरपूर्वक बुलवाया जाय। अतः यह निश्चय हुआ कि मथुरा, वृन्दाबन,गोकुल,बरसाना,नंदगाँव, गोवर्द्धन,महाबन आदि के १० हजार साधुओं के भोज की तैयारी प्रारंभ की जाय। सबको २ - २ सौ दक्षिणा सहित एक एक स्टील का डोल देने का भी निर्णय ले लिया गया, जिसमें वह सुविधापूर्वक जल व भोजन सामग्री आदि रख सकें।

सोच विचार कर २० अप्रैल,२००९ की पुण्य तिथि भी इस शुभ कार्य के लिये सुनिश्चित हो गई। किन्तु भक्तों के व्यथित मन को तो अभी भी व्यस्त रखना है। अतः उनका मन माननीया अम्मा में चिन्तनशील भी रहे, अपनी व्यथा को भूले भी रहें और गुरु सेवा की भावना में भी दिनों दिन अभिवृद्धि होती रहे - इस परम कल्याणमयी भावना से उत्प्रेरित कृपासिंधु श्री महाराज जी ने साधु भोज संबंधी नित्यप्रति नवीन योजनाएँ बनानी प्रारंभ करदीं। यह तो पहले ही वह इंगित कर चुके हैं कि यह कार्य महालक्ष्मी का है अतः धन की तो कोई चिन्ता ही नहीं है। अतः यह उनका नित्य नवीन परिहास भी होता था कि वह सब सत्संगियों से हँस हँस कर पूछते कि "साधुओं को और क्या दिया जाय ?" सभी सोचने लगते कि उनके लिये और क्या उपयोगी हो सकता है ! तरह तरहके हास्यास्पद प्रस्ताव भी आते और सबका मनोरञ्जन होता रहता था।

इस प्रकार सूची मे वस्तुएँ बढ़ती गईं और छाता, कुकर, अँगोछा, दो चादरें,दो जोड़ी अंग वस्त्र, कपड़े धोने के दस-दस साबुन, ब्रुश, पूजा-आसन आदि दस सामान जुड़ गया जिसे एक सुन्दर से बैग में रख कर साधुजनों को अर्पित किया गया। श्री महाराज जी जैसे ही किसी भक्त की राय को स्वीकार करते हुये किसी वस्तु को सूची में जोड़ते थे, तुरन्त ही कोई न कोई भक्त हाथ जोड़ कर उस सेवा को लेने की प्रार्थना करने लगता।

विचित्र बात यह घटित हुई कि जो भी गद्गद् होकर अम्मा श्री की कोई भी सेवा स्वेच्छा से लेता था,वह उस समय कितना ही साधन हीन क्यों न हो,उतना धन उनके पास कहीं न कहीं से तत्कालआ जाता था। जैसे उसे कोई खोया हुआ धन अकस्मात् मिल गया हो।

अतः ये योजना भी दस बारह दिन में समाप्त हो गई। अभी तो ब्रह्म भोज के १० - १५ दिन शेष थे। अब क्या किया जाय ? भक्तों के मन को सही दिशा में व्यस्त रखना मानो गुरुदेव की इस समय ड्यूटी थी।

अब कहीं से प्रस्ताव आया कि श्री वृन्दाबन धाम में कुछ विधवा महिलाओं के आश्रम हैं। उन विधवाओं की बड़ी दीन दशा है। अतः आदरणीया अम्मा संबंधी इस महद् आयोजन में वृन्दाबनवासिनी उन भक्त महिलाओं पर भी अवश्य कृपा - वर्षा होनी चाहिये जो अपने इष्टदेव की आश्रिता होकर अपना जीवन भजन कीर्तन में ही व्यतीत कर रही हैं। श्री महाराज जी को यह बात जँची। पता चला कि उन विधवाओं की संख्या वृन्दाबन में लगभग एक हजार है। अतः अब उन्हें भीभोजन करा कर, दो - दो सौ रुपया व दो - दो जोड़ी वस्त्रों को देने का निश्चय हो गया। इसयोजना के कारण उन भक्तों को सेवा का अवसर मिला, जो १० हजार लोगों की किसी वस्तु की सेवानहीं ले सकते थे किन्तु २ हजार के लिये आगे बढ़ सकते थे। इस प्रकार अन्य बहुत से भक्तों की अम्मा की सेवा का पुनीत अवसर मिल गया।

अगले दिन से वही परिहास पुनः प्रारंभ हो गया कि इन्हें और क्या दिया जाय। शनैः शनैः गद्दा,चादरें तकिया, माला-झोली, चप्पल, मोजा,छाता, नहाने व कपड़े धोने के साबुन, लोटा, टिफिन,तौलिया, चाय बनाने का बर्तन व बक्सा सहित लगभग ३० - ३२ प्रकार का सामान देने का निश्चय हो गया।

प्रभु ने देखा कि उनके बहुत से भक्त जो दो हजार लोगों की किसी सेवा को लेने में भी असमर्थ थे तथापि वे अपनी अम्मा की सेवा के लिये अंदर से लालायित हैं। उनकी मनोकामना को पूर्ण करने के लिये वृन्दाबन स्थित अंधे व कोढियों के आश्रमवासियों की सेवा की बात समक्ष आई। उन आश्रमों के प्रबंधकों ने सामान व भोज की अपेक्षा एक माह की संपूर्ण खाद्य सामग्री लेने की इच्छाप्रकट की। श्रीमहाराज जी ने सत्संग हाल में जा कर तत्काल यह घोषणा कर दी कि जिनकी दान देने की मुराद बच गई हो वह इनके अनाज आदि के लिये दान करें। दस मिनट में दो महीने के अनाज, घी, तेल, मसाले आदि आवश्यक खाद्य सामग्री के लिये पर्याप्त धन एकत्र हो गया और उसी दिन सब सामान उनके पास पहुँचा दिया गया।

विलक्षण साधु भोज

अब श्री महाराज जी की वर्तमान महत्तम योजना साधुभोज में केवल ३ दिन अवशिष्ट थे। अतएव श्री महाराज जी सब को लेकर रंगीली महल बरसाना आये। वहाँ बैठकर वृन्दाबनस्थ अपने "जगद्गुरु आश्रम" में सम्पन्न होने वाले साधु भोज की तैयारियों की पूर्ण सूचना लेने के पश्चात् अनेकानेकवांछित प्रबंध के लिये आदेश व निर्देश देने का कार्य किया। दो दिन पूर्व लगभग एक हजार भक्तोंको सुश्री विशाखा जी (बड़ी दीदी) के नेतृत्व में व्यवस्था के लिये भेज दिया। दो दिन जुट कर, तनमन धन से भक्तों ने आशातीत उत्साह के साथ जी भर के सेवा की। जिसको जहाँ, जो सेवा मिल गई, वह वहाँ से हिलना ही नहीं चाहता था। यहाँ तक कि श्री महाराज जी की तीनो पुत्रियाँव पौत्र भी निरन्तर कार्यशील रहे। दो दिन का कार्य तीनों दीदियों के निर्देश में एक दिन में हीसमाप्त हो गया।

श्रीश्यामा श्याम धाम के प्रबंधक कान्ता जी व श्री महाराज जी के प्रचारक श्री युगल शरण जी के नेतृत्वमें एक अतीव सुंदर व भव्य पंडाल की संरचना की गई जहाँ तीन हजार साधु एक बार में सुविधापूर्वक प्रसाद पा सकें। श्री महाराज जी ने स्वयं उसका निरीक्षण किया और उसके सुदृढ़ीकरणका आदेश दिया।

पंडाल की सजावट अद्वितीय थी। रंग बिरंगी पताकाओं व अम्मा श्री, श्री राधाकृष्ण व श्री महाराज जी के सुंदर सुंदर वृहद् चित्रों से पंडा ल के हर खंभे को सजाया गया था। मध्य में प्रातःस्मरणीया माँ पद्मा (अम्मा जी) के अत्यंत विशाल चित्र के साथ झाँकी सजाई गई थी, जो दर्शनीय थी। स्थान स्थान पर शीतल जल व साधुओं के बैठने की सुंदर व्यवस्था थी। भोजन परोसने व अन्य सेवाओं में रत सभी युवक श्वेत वस्त्र धारण किये थे। कंधे पर बाँई ओर कमर तक लटकते हुये राधे नाम से सुसज्जित लाल रंग के चमकीले पटके मनमोहक लगते थे। पृथक पृथक सेवा वाले युवक पृथक पृथक के रंगों की पट्टियाँ बाँधे थे। सभी कार्यकर्ताओं का एक लक्ष्य और एक ही लालसाथी - श्री महाराज जी की प्रसन्नता के लिये अपनी निष्काम सेवा से हर आगन्तुक साधु को प्रसन्न करना। अतः सभी विनम्रता की मूर्ति बन कर सेवा रत थे।

साधुओं का भोज २० अप्रैल को दोपहर ११.३० पर प्रारंभ हो गया था। तब से लगातार निमंत्रित वअनिमिंत्रित साधुजन आते जा रहे थे। यह ताँता रात्रि ९.०० बजे तक अनवरत चला। क्योंकि श्री महाराज जी का आदेश था कि जो भी द्वार पर आ जाये, भूखा न जाय और अगर वह साधु वेष मेंहै तो उसे दक्षिणा भी दी जाय। इस प्रकार लगभग १५-१६ हजार लोगों का भोज हुआ। किंतु आश्चर्य वाली बात यह थी कि बने हुये भोजन व मिठाइयों के भंडार अभी तक ऐसे भरे हुये थे, जैसे भोज अभी अभी प्रारंभ ही हुआ हो। और ऐसा क्यों न हो ? महालक्ष्मी का भंडारा था न !!

जो भी साधु आते, सर्वप्रथम उनका स्वागत द्वार पर ही साधक जन करते। पश्चात् आसन ग्रहण करने के बाद उनके तिलक व अभिनंदन द्वारा स्वागत किया गया। उसके बाद उन्हें प्रणामपूर्वक उपहारका झोला अर्पित किया गया और श्री महाराजजी के पुत्रों व पौत्रोंने आदरपूर्वक दक्षिणा दी।

सर्वप्रथम दूरस्थ गोवर्द्धन के साधुओं को भोज का समय दिया गया था। पश्चात् वृन्दाबन वासियों कोशेष दूरस्थ बरसाना, नंदगाँव के साधुओं का भोजन बाद में था। सबको इस प्रकार से समय दिया गया था कि एकाएक बहुत अधिक भीड़ भी न हो जाय और दूर गाँवों में रहने वालों को सामान ले जाने की सुविधा के लिये बस भी मिल जाय। इन साधुओं को अपने अपने गाँवों में वापस जाने के लिये श्री महाराज जी ने अच्छी बसों की निःशुल्क व्यवस्था की थी।

वृन्दाबन में सभी के मुख से एक बात सुनने को मिलती थी कि ऐसा भंडारा पहले कभी नहीं हुआ जहाँ दस हजार साधु आमंत्रित हों और सबको इतनी इतनी भेंट दी गई हो। यों तो कोई दीन दुखी अपनी किसी भी समस्या को ले कर, या किसी प्रकार की सहायता के लिये आ जाय तो श्री महाराज जी प्रसन्नतापूर्वक उन को मुँहमाँगी सहायता देते हैं। कोई भी याचक असंतुष्ट हो कर उनकेद्वार से कभी नहीं लौटा। जिस प्रकार वे दिव्यज्ञान व भक्ति के गहनतम् रहस्यों के परमाचार्य के रूपमें विश्व विश्रुत हैं, उसी प्रकार श्री महाराज जी अपनी उदारता,दया व दानशीलता में भी यह अग्रणीहैं। इस बात को उनके निकट रहने वाले साधक ही भली भाँति जानते हैं। क्योंकि इस प्रकार का कितना भी बड़ा कार्य वह करें उसकी प्रसिद्धि नहीं होने देते। उनका कथन है कि दान गुप्त ही होना चाहिये। इतना गुप्त कि दाहिना हाथ दे तो बाएँ हाथ को भी न पता चले। इस साधु भोज के समय हम लोगों ने समाचार पत्र व टी. वी समाचार वालों को आमंत्रित करने की आज्ञा माँगी थी। तो उन्होंने साफ़ मना कर दिया।

लगभग ३५ वर्ष पूर्व एक छात्र, जो **M,Sc**. में दाखिला चाहता था, वृन्दाबन में श्री महाराज जी से कुछ सहायता प्राप्त करने की आशा से आया। श्री महाराज जी उस समय विश्राम कर रहे थे। वहअन्य लोगों से मिला और बताया कि उसे अपनी एम.एस.सी की पढ़ाई पूरी करने के लिये २ हजार रुपये चाहिये।"श्री महाराजजी का बड़ा नाम सुन कर आया हूँ। जो सहायता हो सके, करवाइये।"जब महाराज जी उठे, सब साधक उनके समक्ष बैठे थे, उसी समय उस युवक का परिचय देते हुये एक भक्त ने इस राशि में से यथासंभव कुछ सहायता करने की सिफारिश की। श्री महाराज जी ने कोई उत्तर नहीं दिया और उस युवक की ओर देखा तक नहीं। वह निराश हो गया । सभी ने सोचा कि श्री महाराज जी ने उसकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया। लगभग २० मिनट के बादमहाराज जी ने अपनी चप्पल हाथ में उठाई और परिहास की सी प्रसन्न मुद्रा में कहना प्रारंभ किया "चप्पल, चप्पल। नकद, १० रु. में एक चप्पल।"लोग भाग भाग कर आने लगे। 'महाराजजी ! १० चप्पल। महाराज जी !२० चप्पल।" कोई कहता "महाराज जी ! ५० चप्पल। सर पर। जोर से कि हमारी बुद्धि ठीक हो जाय।" यह अद्भुद् खेल देखकर वह युवक हैरान था कि चप्पल खाने के लिये लोग इतने उत्सुक!

ऊपर से दक्षिणा भी दे रहे हैं !" कुछ ही देर में वहाँ एकतौलिये पर रुपयों का ढेर इकट्ठा हो गया। श्री महाराज जी ने वह तौलिया अपने हाथ में लिया और तौलिया सहित सारा धन उस युवक की गोद में डाल दिया। वह तो आश्चर्य में पड़ गया उनकी निरीहता व दान की विचित्र शैली पर। उसे तो इतना धन चाहिये ही नहीं था। अर्थात् उनके दान व सहायता के विचित्र ढंग भी हैं। वह उस कार्य का गुणगान नहीं पसंद करते।

किंतु **परम पूजनीया जगदम्बा माँ पद्मा** की स्मृति को चिरकाल तक अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये सम्पन्न यह साधुभोज श्री महाराज जी की उदारता व दानशीलता का सर्वोत्तम उदाहरण था।

❋❋❋❋❋❋

एक प्रच्छन्न दिव्य विभूति

हमारा देश सदा से अनंतानंत दिव्य विभूतियों से धनी रहा है। कुछ महापुरुष अपने लोक कल्याण संबंधीकार्यों के कारण संसार द्वारा जानि लिये जाते हैं और संसार उनकी पूजा करता है। किंतु अधिकांश संत अपने को छिपा कर रखते हैं। उनको जानना या पहिचानना बहुत कठिन या प्रायःअसंभव ही हो जाता है। जगद्जननी माँ पद्मा एक ऐसी ही विभूति थीं। पद्मा देवी का जन्म सन् १९२५ में उ. प्र. के प्रतापगढ़ जिले के लीलापुर नामक ग्राम में दीपावली के शुभ अवसर पर श्री कृष्ण कुमार ओझा की धर्मपत्नी सौभाग्यवती राम रती की पुनीत कोख से हुआ। उनके जन्म के समय एक दिव्य वातावरण का साम्राज्य छा गया था,चारों ओरहरियाली व लोगों के मन में एक अज्ञात आनंद की लहरें हिलोरें लेने लग गई थीं। इससे स्पष्ट पता चलता था कि आज इस ग्राम
में एक दिव्य आत्मा का अवतरण हो गया है। चारों ओर समृद्धि की अति वृद्धि देखकर लगा मानो साक्षात् महालक्ष्मी का ही पदार्पण हो गया हो। गौर वर्ण ! अद्भुद् तेजस्विता ! खिलते हुए मुख पर अधरों की दिव्य अरुणिमा !! देखते ही बनती थी।

अपनी बाल सुलभ लीलाओं से सबके मन को बरबस लुभाती हुई यह दिव्य कन्या पाँच वर्ष की हो गई। यद्यपि इस आयु में कोई भी अप नी कन्या के विवाह की बात नहीं सोचता। तथापि इनका लुभावना दिव्य सौंदर्य और आकर्षण माता पिता व पितामह को अभी से यह लालच देने लगा कि इस कन्या का पाणिग्रहण करने वाला सौभाग्यशाली वर कौन होगा ? क्योंकि उनका दिव्य आकार्षण वभोलापन यह संदेशा तो देता ही था कि इनका वर इनसे भी श्रेष्ठ गुणों वाला कोई दिव्य पुरुष हीहोगा। संभवतः उस महापुरुष के दर्शन की लालसा ने इनके बाल्यकाल में ही इनके विवाह की लालसा को जन्म दे दिया।

पद्मा देवी के पितामह श्री माधव प्रसाद ओझा एक बहुत बड़े विद्वान् व ख्यातिप्राप्त ज्योतिषाचार्यथे। श्री महाराज जीउस समय अपने माता पिता के साथ हंडौर ग्राम में रहते थे जो लीलापुर से मात्र५ कि. मी. की दूरी पर स्थित था। कदाचित् उनकी दृष्टि श्री लाल्ता प्रसाद जी के कनिष्ठ पुत्र श्री राम कृपालु पर पड़ी।जो आज जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज के नाम से विश्व विख्यात हैं। जब माधव प्रसाद जी ने प्रथम बार लाल्ता प्रसाद जी के नन्हें से बालक (राम कृपालु जी) को देखते ही रह गये। और सोचने लग गये कि "मेरी पौत्री पद्मा के योग्य तो यही वर हो सकता है। यह बालक कितना सुंदर है कि इस के ऊपर सेनिगाह हटती ही नहीं। जो हाल जनक जी का श्री राम को प्रथम बार बाटिका में देखकर हुआ था ठीक वहीहाल इस बालक को देख करआज मेरा हो रहा है। कैसा अद्भुद् आकर्षण है ! काले घुँघराले बाल! नेत्रों में झरता हुआ दिव्य प्रकाश! दमकता हुआ ललाट! श्रीकृष्ण जैसा नटखटपन! मुखारविंद पर बिल्कुल अपनेपन की मुसकान !! मेरी ज्योतिष विद्या इसमें भगवान् के सारे गुण होने का संकेत दे रही है !" इस प्रकार अपना मन वहीं लुटा कर श्री माधव जी लीलापुर वापस आ गये।

सतत् चिंतन के पश्चात् उन्होंने कन्या के माता पिता के सम्मुख अपना हृदय खोल कर रख ही दिया। अपने पुत्र व पुत्र वधू का स्वीकारात्मक संकेत पा कर वह श्री लाल्ता प्रसाद जी के घर पहुँचे और विवाह की इच्छा प्रकट करते हुये उनके पुत्र राम कृपालु (श्री महाराज जी) की कुंडली माँगी। कुंडली देख कर तो वह दंग रह गये। और कहने लगे ऐसी कुंडली किसी मनुष्य की तो हो ही नहीं सकती। ये तो निःसंदेह स्वयं भगवान् की ही कुंडली है। मैं निश्चित रूप से अपनी पौत्रीका विवाह आपके सुपुत्र से करना चाहता हूँ।

लीलापुर आकर उन्होंने सबको श्री महाराज जी का पूरा अलौकिकत्व बताया और अपनी पौत्री पद्मा के साथ विवाह करने का पूर्ण निर्णय ले लिया। परम्परानुसार विवाह सम्पन्न हुआ। बाल विवाह होनेके कारण कुछ वर्ष वह अपने मायके लीलापुर में ही रहीं। पश्चात् मनगढ़ र हने लगीं।

श्री महाराज जी तो प्रायः बाहर ही रहते थे। पहले शिक्षा के कारण और बाद में अपने प्रचार कार्य के कारण। अतः अम्मा जी अपने अविचल प्रेम व त्याग का अखंड दीपक जलाए अधिकतर लीलापुर या मनगढ़ में ही उनकी प्रतीक्षा में रत रहती थीं। सन् १९६४ से श्री महाराज जी प्रतिवर्ष मनगढ़ में एक साधना शिविर करने लगे। तब से उस एक माह के शिविर के बहाने वह लगभग २-३ महीनेमनगढ़ रहने लगे। तब से हमारी माँ पद्मा को श्री महाराज जी के सानिध्य व सेवा का सौभाग्य मिलने लगा व हम लोगों को भी पूजनीया अम्मा के दर्शन व सानिध्य का अवसर मिलने लगा। और शनैः शनैः भक्तों को उनकी दिव्यता का अनुभव होने लगा।

श्री राधाकृष्ण के निष्काम प्रेमियों के लिये निष्कामता की साक्षात् मूर्ति अम्मा एक ज्वलन्त उदाहरणथीं।मनगढ़ में भी सैकड़ों सत्संगी हर समय श्री महाराज जी की सेवा में लगे होते थे। जिसके हाथजो सेवा लग जाती थी उसे कोई छोड़ता नहीं था। भोजन बनाने से लेकर सारी सेवाएँ सत्संगी ही करते थे। किन्तु अम्मा ने न कभी किसी सेवा पर अपना अधिकार प्रकट करने की चेष्टा की और नही और लोगों

के सेवा करने पर कोई आपत्ति । जबकि समस्त सेवाओं पर उनका ही एक क्षत्रसाम्राज्य था । घर में भी बाहरी भाग में श्री महाराज जी का कक्ष था और भीतरी भाग में अम्मा जीका कक्ष था । श्री महाराज जी प्रायः अम्मा के भाग में चक्कर लगाते रहते थे किन्तु अम्मा महाराज जी के भाग में बिना किसी विशेष कारण के नहीं जाती थीं कि कहीं उनके कार्यो में हस्तक्षेप न हो जाय । जैसे उन्होने श्री महाराज जी को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने कार्यों को करने के लिये पूर्ण स्वतंत्र कर दिया था ।

श्री महाराज जी तो प्रायः यात्रा करते रहते हैं । कहीं कहीं विशेष कार्यक्रम भी होते हैं,जहाँ उन्हेअधिक समय के लिये रुक कर साधना शिविर आदि कुछ करना होता है । किसी किसी यात्रा पर तोप्रायः सभी सत्संगी उनके साथ जाना चाहते हैं । परन्तु परम निष्काम हमारी अम्मा ने कभी भी कहीं चलने की इच्छा स्वयं नहीं व्यक्त की । और न ही न जाने पर कभी किंचित् मात्र भी क्षोभ प्रकट किया । हाँ, श्री महाराज जी के एक बार आमंत्रण दे देने से वे अतिशय प्रसन्न हो कर चलने को तैयार हो जाती थीं । तभी उनकी निष्कामता का आभास सबको हो जाता था । शरीर त्याग के कुछ दिन पूर्व, जब अम्मा अस्पताल में थीं और उनकी हालत गंभीर अवस्था में थी । दिल्ली से बार बार उनकी हालत गंभीरतर होने की सूचना महाराज जी को लगातार दी जा रही थी । मनगढ़ में उससमय १५ दिवसीय होली - साधना-शिविर चल रहा था । देश विदेश से साधक आये हुये थे । श्रीमहाराज जी ने उनसे फोन पर पूछा कि मैं आ जाऊँ ? उन्हों ने तत्काल उत्तर दिया कि नहीं, यहाँ आने में बहुत कष्ट होगा, आप वहीं रहिये । यहाँ हमारी देख रेख बहुत अच्छी तरह हो रही है । ऐसी बीमारी की दशा में हर पत्नी की कामना होती है कि उसका पति उसके पास रहे । फिर श्री महाराज जी के दर्शन के लिये तो यों भी सभी लालायित रहते हैं । तथापि श्री महाराज जी के सुखव उनके कार्य में बाधा न पहुँच जाय, इस भावना से उत्प्रेरित हो कर ऐसा उत्तर अम्मा के अतिरिक्त और कौन दे सकता है ?

ममता उनके रोम रोम से टपकती थी । जब उनकी युवावस्था थी, उस समय भी जोभी साधक आतेथे,जिनकी आयु अम्मा से अधिक या दु गनी होती थी, वे भी अम्मा से विशुद्ध वात्सल्य प्रेम ही प्राप्तकर के जाते थे । उनके सामने सब अपने को बालक रुप में ही अनुभव करते थे । आज से ३० वर्ष पहले की बात है कि एक साधक जो चूना ढोने की सेवा कर रहा था, उसके दोनों हाथ चूने सेकट गये थे । दोपहर को अवकाश के समय, नहा धोकर वह जब सबके साथ भोजन करने आया तोअम्मा भी उधर टहलती हुई आ गईं । उसे कठिनाई से खाता हुआ देख कर उन्होंने ने बड़े स्नेह से उस युवक को बुलाया और कहा,"ए सुवर! इधर आ ।"वह पास आया तो उसके हाथ से उसकी थाली अपने हाथ में लेकर मोढ़े पर बैठती हुई बोली अपार करुणा केसाथ बोलीं,"सारा हाथ तो कटाहुआ है, कैसे खायेगा ? बैठ जा ।"वह भैया पास में ही बैठ गये और अम्मा लगभग २७ वर्ष के उस युवक साधक को अपने हाथ से इस प्रकार खिलाने लगीं जैसे कोई माँ अपने नन्हे से शिशु को खिलाती है । धन्य है माँ की ममता ! वह साधक ममता की डोर में बँधे हुये आज भी मनगढ़ में निवास करते हैं और बिजली संबंधी सेवा में लगे हैं ।

अम्मा में एक सहज सौंदर्य व भोलापन था । जो बरबस सबके मन को खींच लेता था । वे अभी तक ८३ वर्ष की आयु पर्यंत सदा सिर ढके ढके रहती थीं । बिंदी व सिंदूर लगा कर नई नवेली जैसी ही लगती थीं । इतनी आयु हो जाने के पश्चात् भी उनके रूप के निखार में कोई अंतर नहीं दिखाई देता था ।

उनकी छवियाँ अविस्मरणीय हैं । उनके व्यक्तित्व का प्रभाव अप्रतिम है । उनकी ममता अनंत है । उनका त्यागमय जीवन आदर्श है । उनकी निष्कामता भगवत्पथ के पथिक के लिये मार्गदर्शिका है । ऐसी प्रेरणादायिनी माँ के श्री चरणों में बारम्बार प्रणाम है ।

ब्रज बनचरी दीदी जी

A Concealed Divine Personality - Glorious Guru Maa Padma

Amma's Birth And Early Years

Most revered Shrimati Padma Devi (Our esteemed Spiritual mother) is the daughter of Shri Krishna Kumar Ojha and Smt. Ram Rati Ojha, residents of village Leelapur situated 50 miles from Mangarh in District Pratapgarh. She was born on the auspicious occasion of Deepawali in the year 1925. At the time of her birth, a divine breeze permeated the entire region, there was greenery all around and there was an unknown ecstasy in the hearts of the people. It was obvious that a divine personality was born in that village. It was a sight to behold the beauty of this fair complexioned little girl who had a radiant glow with divinely beautiful reddish lips on her innocent baby face. Seeing the increasing prosperity all around, it seemed as if the Goddess of wealth and prosperity, Mahalakcchmi had descended on earth.

Amma's father was a big landlord and a mathematics teacher. He was a very simple person with a strong faith in God. Her grandfather Pandit Madhav Prasad Ojha was a well known astrologer and a great scholar.

Amma's Wedding To Shri Maharaj Ji

Contd on next page..

Enchanting everyone by her innocent childhood pastimes, Amma soon grew up to be 5 years old. No parents can even think of their daughter's wedding at the tender age of five. However, Amma's enchanting divine beauty and attraction made her parents and grandfather often wonder that her husband must be a divine personality with even greater virtues. Perhaps inspired by the desire to behold the vision of that great personality, her grandfather decided to seek a match for her at that tender age!

He did not have to look too far, as his attention was drawn by the divine *leelas* and acts of the youngest son of Shri Lalta Prasad Tripathi, a distinguished Brahmin landlord in that area. When Shri Madhav Prasad Ji saw the little Ram Kripalu, who is today known the world over as Jagadguru Shri Kripalu Ji Maharaj, he could not help but keep looking at him in fascination. He started thinking – Only this boy is worthy of tying the sacred knot with my virtuous granddaughter. This boy is so handsome that it is impossible to take my eyes away from him. My state is like that of King Janak, when he saw Lord Ram for the first time. What an exclusive attraction, dark curly hair, a divine glow emanating from his beautiful eyes, radiant forehead, mischievous nature like that of Shri Krishna and an enchanting beautiful smile!! This way losing his heart to this young boy of eight, Shri Madhav Ji came back to Leelapur and discussed the match with Amma's parents. With their approval, he took the proposal of her marriage with Shri Ram Kripalu to Shri Lalta Prasad Tripathi. Shri LTripathi gladly accepted this proposal and an auspicious date was fixed for the wedding. During their meeting Shri M. Ojha requested to see the horoscope of Shri Ram Kripalu. Seeing his horoscope, Shri Madhav Ji was tremendously delighted as he confirmed his intuitions.

Amma and Shri Maharaj Ji tied the sacred knot on Dec 1, 1930. The next day, on the occasion of "Khichdi" festival, Shri Madhav Ji read their horoscopes and announced that their entire 25 attributes match. This is impossible in this material world. In front of the marriage congregation. he further declared, – "I request you to please behold the vision of Shri Ram Kripalu to your heart's content. In times to come, He will be adored by the entire world and His vision will become rare. He is not an ordinary child. His horoscope proves that God personified is sitting in front of us, because these characteristics cannot be found in anyone other than God himself. Giving my granddaughter's hand to one who is as virtuous as her in wedding, I feel extremely proud and believe that I am highly blessed with a very special divine grace. On the basis of my astrological knowledge, I have this firm faith that in times to come, this child will illuminate the entire world with His divine knowledge. He is an extraordinary saint."

Since then Amma's parents and grandfather started having divine feelings towards both Amma and Shri Maharaj Ji.

As per the tradition of child marriage in those days, , Amma Ji continued to live with her parents in Leelapur for a few years after which she moved to Mangarh.

Amma's Sacrifice, Selfless Love And Devotion

Shri Maharaj Ji would mostly stay away from Mangarh, initially for education and later for preaching. Keeping the lamp of her unfaltering love and sacrifice kindled, Amma spent most of her time in Leelapur or Mangarh longing for the vision of her divine husband. Since 1957, Shri Maharaj Ji started organizing a yearly Sadhana program (month long intensive spiritual retreat) in Mangarh. Since then He started being in Mangarh for two to three months on the pretext of the Sadhana program and Amma got the privilege of Shri Maharaj Ji's association and service. This way, we the followers of Shri Maharaj Ji, also received the privilege of seeing and associating with our reverent mother. And slowly but gradually we started experiencing a glimpse of her divinity. Her selfless love and affection touched our hearts and we started realizing that the shelter of her lotus feet is our true resting place. It is by her grace that we got the privilege of serving Shri Maharaj Ji and had started recognizing his divinity and greatness.

In brief, we could say that the basis of affection, faith and selfless love in the lotus feet of our Guru is our Mother Padma. She is the epitome of selflessness and her sacrifice and devotion to her husband can be considered as the strongest pillar of Shri Maharaj Ji's success.

For the selfless devotees of Shri Radha Krishna, Amma Ji was the foremost example of personified selfless devotion. Hundreds of *satsangis* (devotees) were always engaged in Shri Maharaj Ji's service in Mangarh. No one wanted to give up any *sewa* they received. Right from cooking food, all service was rendered by *satsangis*. However, ***neither did Amma ever exercise her authority on any sewa, nor did she***

raise any objections on others undertaking service of Shri Maharaj Ji. Well the fact remained that she had complete right and authority on all services.

Even in the house, Shri Maharaj Ji used to live in the exterior section and Amma Ji in the interior section. Shri Maharaj Ji used to move around in Amma's section very often; however Amma would never wander in Maharaj Ji's section without a special reason for fear of interfering with any of his missionary work. It appeared as if she had granted Shri Maharaj Ji total independence in undertaking tasks towards the fulfillment of the purpose of his divine advent.

Shri Maharaj Ji often travelled. Sometimes Shri Maharaj Ji had to stay for extended periods of time and conduct Sadhana camps. During several camps, *satsangis* liked to travel with him. However our dear Amma - the epitome of selflessness, never expressed any desire of travelling with Maharaj Ji herself. However, upon Shri Maharaj Ji's invitation Amma would most gladly get ready to travel. It was then, that people realized her selflessness.

A few days prior to leaving her body, Amma was admitted to the hospital and her condition was serious. Maharaj Ji was being kept informed of her worsening condition everyday. This was the time when a 15days Holi Sadhana program was being conducted in Mangarh. Devotees from far and near, India and abroad were present in Mangarh. Shri Maharaj Ji asked Amma, if he should come to Delhi and she replied saying - **it'd be difficult for you to travel so far. Please don't come. I am being taken well care of!!** During a major ailment, it is every wife's expectation and wish that her husband be at her side. Added to it is the fact that everyone craves for Shri Maharaj Ji's darshan. However, keeping Shri Maharaj Ji's comfort and happiness in consideration and to avoid any inconvenience to Maharaj Ji's work and mission, who other than Amma could have replied the way she did.

Once when Amma was very young, Shri Maharaj Ji being busy in his preaching did not come to Mangarh for a long time. Waiting for Shri Maharaj Ji's *darshan*, Amma's patience started wearing out and she decided to give up eating food till such time as Shri Maharaj Ji came back. When Maharaj Ji's mother (Aji) and maternal aunt (mausi) learnt of this, they tried to dissuade Amma from fasting. But Amma would not budge. Seeing Amma stick to her decision, Mausi sent a messenger to Maharaj Ji who at that time was staying at the house of a very dear devotee of Shri Maharaj Ji by the name of Shri Mahabani Ji, to ask him to come back. Shri Maharaj Ji sent the messenger back saying he would not come back till such time as Amma eats. But Amma was not willing to reconsider her decision. Seeing her physical situation getting worse, Aji and Mausi got very concerned and tried to persuade and convince Amma to break her fast. Amma's merciful heart melted and she ate a little to honor their request. As soon as Amma broke her fast, Shri Maharaj Ji appeared as if he was already there and was just waiting for Amma to give up her resolve. Since then, our dear Amma started leading a happy and contented life based on the ideal of "My happiness lies in your happiness". Because this is the highest principle of Shri Maharaj Ji's philosophy. Possibly, this was a divine *leela* by the divine couple to setup a moral amongst the masses. Possibly through this *leela*, Amma Ji indirectly yet again exhibited devotion to her husband by supporting His mission.

Amma's Motherly Affection For Devotees

Affection used to drip from every pore of her body. Even during her younger days, devotees . elder than her, would receive pure maternal love from her. Everybody would consider themselves a child in front of her.

More than 30 years back, one devotee was whitewashing the buildings and both his hands got badly bruised by the whitewash mixture. At noon, that devotee came to the Ashram for lunch and just then Amma came there. Seeing him eat with difficulty, Amma called him close to her. She took his plate in her hands and sitting on a small stool said to him with a lot of love and compassion - **How will you eat. Your hand is badly bruised. Sit down.** That young man of 27 sat down on the floor beside Amma and Amma fed him with her own hands, just the same way as a loving mother would feed her small child.

Amma had a natural beauty and innocence that forcibly drew everyone's heart towards her. She would keep her head covered even at the age of 83yrs. Wearing a *bindi* and vermilion, she still looked like a newly wed bride. Even at this age, her beauty and elegance was intact.

Her memories are unforgettable. The impact of her personality is incomparable. Her affection is immeasurable. Her sacrifice is an ideal for our lives. Her selflessness acts as a guide for all spiritual aspirants. We pay countless obeisances to the lotus feet of such an inspiring and loving Mother.

The Day Of Catastrophe

On March 13' 2009 - Shri Maharaj Ji's devotees were devastated to learn that their loving mother – Guru Maa Padma, had suddenly withdrawn the shelter of her immense love and grace and had left for her divine abode. Despite the presence of our causelessly merciful master, millions of Shri Maharaj Ji's devotees, who used to remain drenched in the ocean of her love and lovingly referred to her as Amma, felt they were orphaned. Their hearts were screaming as if to say - Oh! Where will we find such selfless motherly affection! That loving shelter!! The soothing feeling of closeness that we used to receive from Amma without even asking for it!! If we were punished by Shri Maharaj Ji, we would always go running to Amma to cry our heart out to her. If we were tired, dejected & lost and would go to her, we would get the opportunity to vent our woes and frustrations to her. Amma would say something in her innocent native language that would bring a smile on everyone's face, while providing us an answer to our questions. Alas, all this is irreplaceable.

Reminiscing about her love and affection, the devotees were heart broken. Our father like Gurudev, who himself is an ocean of love, fully understood the sentiments of his children and out of his causelessly merciful nature, started making plans to ease their mental stress and sadness. He first made preparations for a befitting funeral for our divine mother and chose to cremate her mortal remains in the holy land of Vrindaban. Out of compassion and love for his devotees, Shri Maharaj Ji asked for Amma's mortal remains to be preserved for 1.5 days to enable everyone who wanted to pay their last tributes to Amma to reach there. Devotees from all over the world started flocking in Vrindavan to pay homage to our dear Amma Ji. During this time, the devotees already present in Vrindavan, kept circumambulating around Amma's body, while chanting divine names and shedding tears of love and respect for Shri Amma Ji.

Next day, decked in all bridal finery, surrounded by thousands of devotees, Amma's mortal remains were situated on a beautifully decorated chariot and taken to the banks of river Yamuna, passing through the streets of Vrindavan, circumambulating every temple on the way. Seeing thousands of devotees participating in that last journey, it appeared that the entire world was getting anxious to pay their last homage to their loving mother. And why not? Amma by nature is the "Mother of the entire Universe".

Readers may be very curious to know, what was Shri Maharaj Ji's reaction and state of mind in the event of the calamity. He may have been sad, he would probably have cried in private. We, conditioned souls are in no position to understand and comment on Shri Maharaj Ji's state of mind. However, it was not obvious from any of his words or actions that a calamity had befallen. He remained as normal and calm as he was when Amma was physically present on earth. For the fact remained that Amma had indeed not parted from him even for a moment. Shri Maharaj Ji indicated the same in a brief talk to the *satsangis* in which he said that **your Amma has not gone anywhere. She has come inside me.** During this entire time, Maharaj Ji was constantly engaged in ensuring normalcy and mental balance in the *satsangis*.

By his words and actions Shri Maharaj Ji, proved to the world yet again that he is not just a preacher of Vedant Philosophy, rather that philosophy is self illumined in his being and stays unaffected in all situations. After Amma's departure, he proved the truthfulness of the philosophy of Gita and Vedant that he propagates by putting it into practice and demonstrating it through his own daily lifestyle. Shri Maharaj Ji knew very well that overcome by the love of their mother, the devotees will not listen or understand any philosophy. That is why through his own daily lifestyle, he made them understand and practice the philosophy, which also helped in consoling their grief stricken hearts.

Ceremony In The Memory Of Our Revered Mother

Terhvi And Brahma Bhoj In Mangarh

The residents of Mangarh, where Shri Amma Ji dwells forever in a subtle or bodily form and whom Amma Ji had always treated as her own children were inconsolable. Upon reaching Mangarh after performing Amma Ji's last rites, Shri Maharaj Ji gave a precious small talk to ease the pain of the Ashram residents. Shri Maharaj Ji reiterated the fact that Shri Amma Ji had not gone anywhere. She had merged with him in her subtle form.

The "Terhvi" ceremony was organized on March 25 2009 in Mangarh to mark the thirteenth day of Shri Amma Ji's departure for her divine abode. On this day a grand "Brahma Bhoj" was also organized, where over 20,000 brahmins, villagers and poor people were fed with great respect and

given generous gifts. 13 prominent Brahmins were gifted a motorcycle and Rs 1000 each. Another 1000 Brahmins were gifted a bicycle each and were given many generous gifts. The barbers, who had performed the ceremony to shave the heads of male family members, were also treated with great respect and given generous gifts.

This way the thirteenth day ceremony and Brahma Bhoj celebrations were organized, conducted and concluded in a very elegant, systematic and organized manner, the memories of which will forever etch our minds.

Sadhu Bhoj In Vrindavan

The day after Brahma Bhoj, bidding farewell to the devotees in Mangarh, Shri Maharaj Ji left for Golok Dham-Delhi to start preparing for the Sadhu Bhoj in Vrindavan. Hundreds of devotees followed Him to Golok Dham. Shri Maharaj Ji wanted to invite all Sadhus in Braj Mandal for the Sadhu Bhoj. Braj Mandal spans across many villages and towns such as Mathura, Vrindavan, Gokul, Barsana, Nand Gaon, Govardhan, Mahaban etc. As per Shri Maharaj Ji's wish, 10,000 sadhus were invited and preparations were made to gift them 200 rupees and a steel vessel. April 20 2009 was finalized for this Sadhu Bhoj. To engage the devotees minds in the memory of our divine mother, to ensure that they are not grief stricken by her departure and to increase their feelings of offering service to the Guru, Shri Maharaj Ji, started changing plans for Sadhu Bhoj everyday. It became a humorous discussion everyday, wherein Shri Maharaj Ji would ask the devotees, what more should be given to the Sadhu's? Devotees started adding new items each day and the list started getting longer and longer - 10 items such as umbrella, pressure cooker, two sets of bed sheets, two sets of clothes to wear, 10 bars of washing soap, toothbrush, Puja mat etc, got added. It was decided to pack these items in a beautiful sturdy bag, especially made for the occasion, to be gifted to the Sadhus on Sadhu Bhoj.

All devotees were anxious to grab the opportunity to take up any *sewa* as soon as it was announced. This was obvious, when one or the other devotee would gladly request for an opportunity to do the *sewa*, as soon as Shri Maharaj Ji would add an item to the list. What was noteworthy was the fact that if someone accepted any *sewa* willingly and lovingly, somehow magically, he would get the means and the money to do that *sewa*.

After all these preparations were over, there still were almost 15 days left for the Sadhu Bhoj. To continue to keep everyone's minds engaged in the loving memory of Amma Ji, Shri Maharaj Ji now planned for a Widow Bhoj. Widows lead a very poor and neglected life in Vrindavan. Therefore, it was obvious, that these women, who are spending their lives dependent only on God, would be graced, as part of this vast ceremony being held in memory of our revered Mother. It was time now to identify items to be gifted to these women - gradually the list became longer and longer - 30 items such as mattress, bed sheets, pillow, footwear, socks, umbrella, bathing soap, washing soap, lunch box, towel, saucepan, cooking vessels, a box to keep all this stuff were included in the list.

Having given so much, Shri Maharaj Ji still did not seem satisfied and wanted to plan more donations. Added to it was the intense feeling of love, amongst the devotees and the desire to do Amma Ji's *sewa*. Shri Maharaj Ji then decided to do something for the blind people and people suffering from leprosy. The ashram organizers for these people, requested for provisions for a whole month. Shri Maharaj Ji decided to give 2 months worth of food rations.

Shri Maharaj Ji had also organized free buses to take the Sadhus back to their place of living, after the Bhoj, to ensure that they could carry all gifts without any problem.

On the day of the Bhoj, a beautiful tent was setup in Jagadguru Dham Vrindavan for the ceremony. Every single pole in the tent was decorated with colorful flags and pictures of Shri Radha Krishna, Shri Maharaj Ji and Amma Ji. In the centre a magnificent exhibit was created, where a huge cutout of Amma Ji was placed. Clean drinking water booths were setup inside the tent and a beautiful arrangement was made to seat the Sadhus.

The Bhoj started at 11.30 AM and continued till 9.00 PM. It was Shri Maharaj Ji's instructions that everyone should be treated with utmost respect and no-one should be turned away. And if someone was dressed as a Sadhu, he should also be given monetary gift.

Everyone who attended the Bhoj was heard saying that they had never attended any Bhoj so grand and organized as this one and nowhere else were they treated with so much respect and courtesy.

Though Shri Maharaj Ji has always been well known for his generosity and no-one has ever been turned away from his door without receiving more than what they asked for, yet, this Sadhu Bhoj organized to keep Shri Amma Ji's memory alive, forever is the best example of Shri Maharaj Ji's benevolence and generosity.

Article by Braj Banchary Didi Ji

Guru and God

There are several verses in our scriptures that describe the importance of a Guru such as

आचार्यं माम् विजानीयान्... भा.११.१७.२७

यस्य साक्षाद् भगवति भा.७.१५.२६

एष वै भगवान् साक्षात् भा.७.१५.२७

These verses are quoted from Srimad Bhagwatam. This verse was narrated by Shri Krishna in response to a question posed by his childhood friend - the great gyani Uddhav. The question was - Amongst God and Guru - who is superior? Is God superior to Guru or is Guru superior to God or both God and Guru are equal?

Sri Krishna replied - Guru and I are not two distinct personalities. If they were, then the question of who is superior and who is inferior would arise. When an individual soul attains God, he stops performing any actions. All his actions are performed by God Himself. For example - When someone's soul is possessed by a spirit, that person stops performing any actions. All his actions are performed by the spirit which has taken over his body. Similarly, when someone completely surrenders to God, his mind gets cleansed of all material attachments, and God takes complete charge of that person.

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् । गीता ९ २२

The saint seems to be performing actions just like us but in reality God sits in his mind and performs all actions. The science behind this is also explained in the scriptures. The scriptures proclaim -

प्रयोजन मनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते ।

Even a foolish person does not perform any action without a reason. Every action is performed with a reason or objective in mind. for e.g. all our actions such as sleeping, waking up, standing, sitting down, lying down, laughing, crying etc, are performed with the exclusive purpose of attaining happiness. Upon God realization, one attains divine happiness after which nothing remains to be attained. Then why would one perform any more action? One is freed from the burden of performing actions forever. Now God Himself performs all his actions. Arjun killed millions in front of million others. However God says, “Arjun has done no wrong. I have done this. I have killed each of them” i.e. any action performed by a saint is not performed by Him; instead it is performed by God Himself.

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्थाः

This verse is from the Kathopnishad. It means, beyond the senses is the objects of the senses, beyond the object of the senses is the mind, and beyond the mind is the intellect. Beyond the intellect is the soul, beyond the soul is Maya and beyond Maya is God. God is the ultimate reality and there is nothing beyond God. The individual soul has eternally been under the influence of Maya, however, once the soul completely surrenders to God, Maya is eliminated and God directly becomes the governor of this soul.

So Krishna says, your Guru and I are not two different personalities. Consider the Guru to be Me for I sit inside the Guru and govern his actions. Never use your material intellect to judge the Guru. All forms of God reside within Him. This is the meaning of 'आचार्यं माम् विजानीयान्'

In the second verse यस्य साक्षात् भगवति । the same idea is conveyed. Guru is God personified. Not equal to God, He is God Himself.

The third verse is

एष वै भगवान् साक्षात् प्रधान पुरुषेश्वरः ।

योगेश्वरैर्विमृग्यांघ्रिर्लोकोऽयं मन्यते नरम् ॥ 7 15/27

Considering a God realized saint to be a material being, upon seeing Him perform ordinary actions like other conditioned souls, is the most serious spiritual transgression, which has very damaging results. It distances one from God. We have committed such spiritual transgressions in several life times. Our scriptures do not recommend any penance to atone for such spiritual sins.

Actions performed by conditioned souls are under the influence of Maya, as such bear consequences. God performs all actions using his most potent divine power called "Yogmaya". The quality of Yogmaya is that while performing any action using Yogmaya the performer of the action stays in his personality while performing seemingly material actions i.e. from within He is devoid of Maya but externally is performing the acts of Maya. Upon God realization, God grants this most potent power “Yogmaya” to that Saint and from then on, all actions of the God realized saint are performed using "Yogmaya", hence do not bear any consequence.

In a nutshell, all three verses mean the same that God and Guru are ONE. We must not commit spiritual transgressions by judging the deeds done by Yogmaya as being material and should perform devotion to God and Guru as instructed by our spiritual master.

Monsoon Season Special

युगलवर झूलैं कुंज कुटीर ।
Yugalwar Jhulein Kunj Kuteer

नथवारी प्यारी अरु प्यारो, मुरली वारो वीर ।
Nathwari Pyari Aru Pyaro, Murli Varo Veer.

झूला डर्यो कदंबनि डारन, कालिन्दी के तीर ।
Jhoola Daryo Kadambani Daaran, Kaalindi Ke Teer.

श्यामा झूलति श्याम झुलावत, ह्वै रस प्रेम अधीर ।
Shyama Jhoolati Shyam Jhoolavat, Hvai Ras Prem Adheer

गावति मेघ मलार अलिन मिलि, पुलकित सकल शरीर ।
Gaavati Megh Malaar Alin Mili, Pulkit Sakal Sharir

लखत कृपालु शंभु सनकादिक, धरि तनु शुक पिक कीर ।
Lakhat Kipalu Shambhu Sankadik, Dhari Tanu Kokil, Keer

In the Monsoon season people welcome the first showers with rejoicing. This is a description of one of those seasons when Shri Radha and Krishn had descended on the Earth and distributed the Braj Ras to the deserving souls in that season.

The Divine Couple - Shri Radha - one who wears a beautiful nose ring and Her Divine Beloved Shri Krishn - one who carries a flute, are engaged in the *leela* of swinging on a swing.

The swing is tied on a branch of a Kadamb tree, on the banks of river Yamuna. Pitter patter rain drops are falling. The Kadamb tree is showering flowers on them. Other trees and plants are in full bloom.

Drowned in the ecstasy of divine love, Shri Krishna is swinging Shri Radha. Shri Krishn is ecstatic being in Shri Radha's service and Shri Radha is ecstatic seeing Shyam Sundar's happiness.

Shri Radha's friends are singing raag Malhar (a composition that brings rain). Being in the service of their divine beloved couple and seeing them so happy, Shri Radha's friends are exhibiting signs of divine ecstasy too.

The divine poet Shri Kripalu Ji Maharaj says, that such is the bliss of this divine *leela* that Bhagwan Shankar and Sankadik Paramhans have assumed the bodies of peacock, parrot and nightingale to participate and enjoy the beautiful sight.

Kidz Corner

Laugh to be Healthy

Student (on phone): My son has a bad cold and won't be able to come to school today.
School Secretary: Who is this?
Student: This is my father speaking!

Mother: Why aren't you doing very well in history?
Son: Because the teacher keeps asking about things that happened before I was born!

Mother: How was your first day at school?
Son: It was all right except for some man called "Teacher" who kept spoiling all our fun!

Fred came home from his first day at school. "Nothing exciting happened", he told his mother, "Except the teacher didn't know how to spell cat so I told her".

Answers of Quiz Published in 2009 Holi Edition

1. *Jagadguru Shankaracharya, Jagadguru Shri Kripaluji Maharaj* **2.** *In Mangarh, on the auspicious night on Sharat Poornima in 1922* **3.** *Roopdhyan or thinking about the divine form of God.* **4.** *Shri Radha-Krishn* **5.** *Golok Dham* **6.** *Bhakti or Devotion*

Find the Words

Embedded in this matrix are nearly 30 names of God, his aides and other devotion related words. The words can be in horizontal, vertical, diagonal going forward or backward.

Find as many as you can and mail them to skkasecretary@gmail.com. Correct answers and names of children who are able to identify maximum number of words will be published in the next newsletter.

B	H	A	G	A	V	A	T	U	L
H	A	N	U	M	A	N	U	R	A
A	N	A	N	T	M	N	P	U	Y
G	A	N	Z	Y	A	D	U	G	S
W	M	D	K	A	N	S	T	I	T
A	H	I	R	S	I	T	A	T	A
N	A	N	A	H	O	M	N	A	M
K	L	G	A	O	M	R	A	M	A
N	A	R	A	D	H	A	P	N	R
T	R	I	N	A	V	A	R	T	I

Is there no God?

A man went to a barber shop to get a haircut.
As the barber began to cut his hair, the two engaged in a social conversation. They spoke on several topics and discussed various subjects. Eventually they embarked on the subject of God.

The barber said: I don't believe God exists.
Man Surprised: Why do you say that!!
Barber: Well, you just have to look around to realize that God doesn't exist. For, if God existed
Would there be so many sick people? Would there be so much violence and killing in the world? Would there be so much suffering and pain? I can't imagine how God (if he existed), would allow so much misery in the world.

The man thought of an appropriate response to that statement, but finally decided not to say anything for fear of starting an unpleasant argument. After the barber had finished his job, the man paid for the service and left the shop. Just as he was heading out of the shop, he saw an old beggar on the street with long, stringy, dirty hair and an untrimmed beard. The old beggar looked dirty and unkempt. Seeing him, the man got an idea and instead of leaving the barber shop, went back in and proclaimed - I don't believe Barbers exist!!!

Now it was the Barber's turn to be surprised. He demanded to know as to why would that man make such an obviously incorrect statement when, he had just a few minutes back personally used the barber's service.

The man re-iterated that '**Barbers don't exist**'.

Upon the barber's insistence, the man pointed to the old beggar on the street and said - If Barbers existed, why would there be that old beggar, with long unkempt hair and untrimmed beard? The barber, laughed out loud and explained that the old beggar's state was not caused by the fact that barbers don't exist but because people such as himself don't go to barbers!!

The man replied: On the same token, there is so much pain and misery in the world, not because God does not exist but because people do not go to God and seek refuge/shelter under him. Just as the barber rendered his services to whoever came to the barber shop, similarly God graces those and takes care of those who surrender to him. Scriptures say that for the rest, God sits in their heart and notes their actions and acts as a judge.

Glimpses from India

April 22, 2009: Nearly 2000 widowed women were provided meals, items of basic necessities and a monetary help of Rs. 200 each.

April 20, 2009: Everyone who came for the Sadhu Bhoj was given a warm welcome and treated with utmost respect and courtesy. Nearly 15,000 *sadhus* were provided meals, items of basic necessities and a monetary gift of Rs. 200 each.

March 14, 2009: Amma's mortal remains were situated on a beautifully decorated chariot, surrounded by thousands of devotees who came of pay their last homage and have the last vision of their loving mother.